चित्रो को देख कर भी हसी आती है। ऐसे चित्र कोई होते नही है। वास्तव मे तो रांग है। नां यह शंख आद ही है। शंख गदा चक्र मूल आद सब यह ब्राहम्णों की है निशानी है। सर्विस बढाने के लिये म्यूजियम मिसल सैन्टर होना चाहिये। वो ही सर्विस को बढा सकता है। अवलोय मातोय विना चित्रों के समझ नही सकेगी। म्यु= मयूजिअम होता है पुराने चित्रो का। इयह है लनये चित्रो का। तुम इन चित्रोपर समझा सकते हो कि सतयुग मे देवताओं का राज्य था तो शान्तीः थी। अब असुरो का राज्य है तो अशान्तिः है। इन का जब विनाश हो तब शान्तिः हो। पुरानन कलयुगी दुनियां का विनाश सामने खडा है। विश्व मे शान्तिः होती ही है ल-न के राज्य मैं। उन की राजाईको 5 हजार वर्ष हुआ। कहते भी है कि क्राईस्ट से 3 हजार साल पहले शान्तिः थी एक है राज्य था। एक ही धर्म था यह कोशिश कर रहे है कि लडाई नही लगे। परन्तु लडाई लगने विना वां अनेक धर्मो का विनाश हुये विना शान्तिः हो ही कैसे सकती है। एक धर्म की स्थापना हो रही है सो तो हेवनली गाड फादर का ही काम है। बच्चो को खुशी होनी चाहिये। आसुरी गुण छोड कर दैवी गुण धारन करने है। निन्दा चुगली करने से सत्यानाश हो जाती है। गोप-गोपियों को यह खुशी है कि बेहद का बाप हमको पढाते है। उनके है हम बच्चे है। प्रजापिता ब्रहमा के बच्चे तो दोनो ही होगें नां। बहन-और भाई। उनको पवित्र भी जरूर रहना है। तुम तो प्रदर्शनी कर फिर चले आते हो। इसीस तो म्यूजियम होवे तो अच्छा रहेगा। सो भी एक शहर मे बडे-2 10-12 म्यूजियम होने चाहिये। बाप तो बच्चो को पुरुषार्थ कराते रहते है कि प्रगाम दी सको। दुनियां थोडेई जानती है। अगर पैगामन ही देते हो तो पैगम्बमर के बच्चे ही कैस ठहरे। ल-न के चित्र से समझेंगे कि भारत मे इन ल-न का राज्य था। चतुर्भुज विष्णु से क्या समझेंगें। राईट चित्र तो (ल-न) यह है नां। कोई भी नही जानते है कि यह शंख चक्र पदम-गदा आद ब्राहम्णों को ही होता है। गुडनाईट

3-7-67:-:-रात्री क्लासः-:-चित्र भी सभी रखे हुये है। सर्विस पर है जो रहते है उनको तो दिल पर ही याद है। सारी सृष्टी की आद मध्य अन्त का राज बुधी है ही है। चित्र को देखने की जरूरत नही है। औरों को समझाने मात्र थोडे से चित्र बनाये जाते है। उसमे भी त्रिमूर्ती है मुख्य। सीढी भी समझाने लिये बहुत अच्छी है। दिखाते है कि ब्रहमा द्वारा स्थापना तो जरूर ब्रहमा ही चाहिये। हम ब्र, कु, कु, है तो जरूर बाप का ही चित्र रखेंगें नां। इन दवारा बाप बैठ समझाते है। बहुत सहज है। यह भी बच्चे जानते है कि बाप आया हुआ है साथ मे ले जाना है। पुराने कर्म बन्धनो को भी युक्ति से काटना है। कोई-2 का बहुत कर्मबन्धने कडे होते है। यह कोई नई बात नही है। यह अत्याचार कल्प पहले भी हुये थे। अब बाप ने फरमान निकाला है कि काम महाशत्रु है। इन माया को जीते जगत जीत बनना है तो तुम विश्व का मालिक बन जावेंगें। बाप जो सिखाते है वो सीखना है श्रीमत पर चलना है। बहुत सहज रास्ता बताता हूं कि तुम मुझे याद करो तो तुम पावन देवता बन जावेंगें। बच्चो को पता है कि हम ही पुज्य थे हम ही अब पुज्य बन रहे है। बहुत खुशी होनी चाहियेकि पुराना हिसाब किताब चुक्तु करते हो। इसमे मूंझने थकने की बाते ही नही है। (बाबा नब्ज देख कर ही राय देते है। राय पर अगर वो नही चले तो और ही उसका नुकसान हो जावेगा।) बाबा हर एक का कारण देखते है। अच्छा जोर से कमाते हो तो सेन्टर्स भी जोर से ही खोलते जाओ। परन्तु ऐसे-2 श्रीमतपर चलने वाले भी बहुत कम है। धन मे मदद करने वाले भी बहुत कमहै। बच्चो को मंडिल लगा ही रहना चाहिये। यही है यादगार। उनको देखने से सारा चक्र याद आ जाता है। बाप की याद भी रहगी तो विकर्म भी विनाश होगें। यह बैजिज है अन्धो की लाठी। व्यवहार मे रहने पर क्लास रोजाना करना चाहिये। उसोस ही अच्छी रिफ्रेशमेन्ट मिलती रहती है। क्लास मे जरूर ज्ञान का प्याला रोज पीना चाहिये। कोईबिमार होकर थोडे समय बाद फिर अच्छे हो जाते है तो कितनी खुशी होती है। तो तुम्हरी भी बिमारी दूर होती है नां। गड नाईट